ना मजहब

ना नजहब दीवार बनाये रहे प्रेम सौहार्द से।
मानव हो मानवता सीखे कर्म न हों उन्माद से।।
सबके तन में खून एक है भेद कहाँ है खुद देखें।
आपस में क्यों फ़र्क बनाये जाति बना पोथी लेखें।।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई दूर रहें भ्रमवाद से।।
ना मजहब.....

जो भी आया इस दुनिया में निश्चय ही वह जायेगा।
है बुलबुला सम तन सबका पल भर में मिट जायेगा।।
अपना हक ही केवल खाये क्या मिलता बकवाद से।
ना मजहब.....

काल बने लाचारों के वो उग्री कहलायो जग में।
खून वहा दहशत फैलाये बारुदी सुरंग मगमें।।
ध्यान रहे कर्मो के फल तनु घटे नहीं फरियाद से,
ना मजहब.....

धन वैभव पा दीन दुखी को कभी त्रास ना देवे।
कर्मो का फल भाग्य कहाये जान जान ना दें लेवे।।
तज आपा आपस में रहले भ्रमित न हो सम्बाद से
ना मजहब....

कितने दिन रहना है जग में, समय अमूल नहीं खोये
नेकी करें राह के कॉटे, हटा देय ना फैलाये।।
अफ़शाना रह जाये खाली, बचे रहे अपवाद से।
ना मजहब.....

एक चॉद एक भानु जहाँ में एक यमुन एक गंगा।
सभी का दुख अपना सा जाने मिलके करे मन चंगा।।
अविनाशी आनन्द मिलेगा, बच जाये अपराध से।।
ना मजहब....

डा० देवीदीन "अविनाशी"